eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

छत्तीसगढ़ के तीज–त्यौहार में पर्यावरण के सीख

मन्ना राम पटेल[1]
[1]सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान शा0एस0एन0जी0 महाविद्यालय मुंगेली, (छत्तीसगढ़)

Received: 20 Jan 2025, Accepted: 25 Jan 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2025

Abstract

भारत गांवों का देश है। यहॉ की संस्कृति गांव के जन मानस में गहराई से व्याप्त है। मिट्टी की सोंधी महक गांव के संस्कृति में विराजमान है और संस्कृति को प्रवाहमान बनाने में लोक पर्व और त्यौहार की बड़ा महत्व है। ये जीवन के साथ–साथ संस्कृति को जीवन्त और अजर–अमर बनाने में इसकी महती भूमिका है। त्यौहार के आयोजन का उद्देश्य के पीछे की जो भावना है वो हमारी संस्कृति की परम्परा को लगातार पोषित व भावी पीढ़ी के हस्तांतरण में भूमिका का निर्वाह करती है। त्यौहार की दृष्टि से छत्तीसगढ़ में वर्ष के बारह माह में कोई न कोई त्यौहार व पर्व का आयोजन होते रहता है, जो यहॉ की संस्कृति को जीवंत, पर्यावरण की सम्मान और सांस्कृतिक भावना को उल्लासित करती है।

बीज शब्द– छत्तीसगढ़ राज्य, तीज–त्यौहार, पर्यावरण, सीखना।

Introduction

"जय जोहार", हमारे छत्तीसगढ़ में अनेक प्रकार का त्यौहार मनाया जाता है, यहॉ पर निवास करने वाले विभिन्न जाति और जनजाति तरह–तहर के त्यौहार मनाते है। हर त्यौहार बड़े ही हर्ष–उल्लास के साथ मनाया जाता है और प्रत्येक त्यौहार में अलग–अलग किस्म के व्यंजन भी बनाये जाते है। प्रत्येक त्यौहार किसी न किसी तरह से पर्यावरण से जुड़ा हुआ है कुछ त्यौहार वर्षा से, तो कुछ त्यौहार खेती व किसान से, तो कुछ त्यौहार पेड़–पौधों से, तो कुछ त्यौहार पर्वत–पहाड़ से, तो कुछ त्यौहार मिट्टी से जुड़ी हुई है और कुछ त्यौहार देवी–देवताओं के पूजा–अराधना से जुड़ी हुई है।

छत्तीसगढ़ के कुछ प्रमुख त्यौहार जिनका विवरण इस प्रकार हैः–

हरेलीः– हरेली त्यौहार छत्तीसगढ़ का प्रथम त्यौहार माना जाता है। यह सावन अमावस्या को मनायी जाती है। इसी दीन गौठान में गाय–बैल, भैंस को पास पेड़ के पत्ते से नमक खिलाने की प्रथा है फिर बचे हुए नमक को ग्वाले को दिया जाता है। और गौठान से मिट्टी लाकर कृषि उपकरण जैसै– हल, हंसिया, कुदाल, कुल्हाड़ी आदि को धोकर अपने घर के प्रवेश द्वार के बगल में रखकर गौठान के मिट्टी के ऊपर रखकर पूजा की जाती है। यह त्यौहार कृषि से जुड़ा है। कोई व्यक्ति कुटकी दाई, तो कोई ठाकुर देव की पूजा–पाठ कर अच्छे फसल व उपज के लिए कामना करतें हैं। और इसी दिन गुड़हा चीला, बोबरा चीला जैसे रोटी का प्रसाद चढ़ाते है।

इसी दिन बच्चे बांस का गेड़ी बनाकर उसमें चढ़ते और नृत्य करते हैं। ग्वाले इस दिन सभी कृषक के घर के प्रवेश द्वार में व जहॉ गाय–बैल रहते है वहॉ पर वन से लाया हुआ विशेष डाल, नीम का टहनी और लुहार लोहे का पाती लगातें है। ताकि तंत्र–मंत्र, जादू–टोना करने वाली बुरी शक्ति का कोई घर में प्रवेश ना हो सके। आजकल इस त्यौहार के माध्यम से सरकार पर्यावरण संरक्षण वन विभाग के माध्यम से अधिक से अधकि पौधारोपण पर जोर दे रही है। इसी दिन से छत्तीसगढिया ओलम्पिक खेल की शुरूवात कर शासन ने इस त्यौहार को तवज्जो दी है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

नागपंचमीः– यह त्यौहार श्रावण माह के शुक्ल पंचमी को मनाया जाता है। हमारे छत्तीसगढ़ के लोगों में यह मान्यता है कि शेषनाग देवता के उपर ही सारी धरती मां का भार है और इसी दिन अपने सिर पर रखे सेज को शेषनाग बदलते है जिस कारण से यह त्यौहार मनाया जाता है। नागपंचमी के दिन ही सांप को दूध पिलाया जाता है व लाई चढ़ाया जाता है और उनको मारा नहीं जाता है। इस दिन धरती मॉ की खुदाई नहीं की जाती जिस कारण से इस दिन सभी किसान किसी भी प्रकार का कृषि कार्य नहीं करते है। इस अवसर पर जांजगीर–चांपा के दहला पहाड़ पर मेला लगता है जहॉ दूर–दूर से व्यक्ति देखने आते है। इसी दिन ही कुश्ती का आयोजन होता है जिसमें अपने–अपने वजन व ताकत के साथियों के साथ ताकत आजमाते है।

कजरी त्यौहारः– छत्तीसगढ़ की माताएँ इस त्यौहार को श्रावण माह के नवमी से लेकर पूर्णिमा तक मनाते है। यह त्यौहार सिर्फ माताएँ ही मनाती है । इस त्यौहार में बेहतर फसल की कामना करते हुए विधि–विधान से पूजा–अर्चना करते है। और इसी त्यौहार से गेहूँ और जौ की बोआई प्रारंभ होती है ऐसी मान्यता है।

रक्षा बंधनः– रक्षाबंधन भाई–बहन का यह राखी त्यौहार श्रावण माह के पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भैया के कलई पर राखी बांधती है और भैया अपने बहन की रक्षा का वचन भी देते है और अच्छे फसल की कामना करतें है।

भोजली त्यौहारः– भोजली त्यौहार रक्षाबंधन के अगले दिन, भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन मनाया जाता है। इस दिन एक सप्ताह से पहले गेहूँ, जवा बोवाई करके उसकी रात्रि सेवा करने की परम्परा है। कुवांरी कन्या अपने–अपने सिर पर भोजली लेकर नदी, तालाब में रिती–रिवाज व परम्परा से विसर्जन करते है। भोजली को अपने–अपने साथी के कान में खोंचकर मितान (मित्र) बनाने की परम्परा भी है और भोजली माता से गीत के माध्यम से अच्छे फसल की अरजी–बिनती करते है।

कुछ भोजली गीत के अंशः–

"पानी बिन मछरी, पवन बिन धाने,
सेवा बिन भोजली के तरसे पराने,
हा ओ देबी गंगा, देबी गंगा, देबी गंगा,
लहर तुरंगा हो लहर तुरंगा।"

बहुला चौथः–भाद्रपद माह कृष्ण पक्ष के चतुर्थी को बहुला चौथ त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन माताएँ गड्डा खोदकर छोटा सा तालाब बनाकर शंकर भगवान को जल अर्पित करते है और अच्छे फसल की कामना करते हुए पूजा–अर्चना करते है।

खमरछठः– यह त्यौहार माताएँ भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की षष्ठी को मनाते है। जो माताएँ व्रत रखती है उनको नाई महुआ वृक्ष का दातुन और दोना–पत्तल पूजा–अर्चना हेतु देते है। और ऐसी मान्यता है कि इन दिन व्रत रखने वाली महिलाएँ जिस भूमि पर हल नहीं चला रहता है उसी पर चलती है। इस दिन माताएँ अपने बच्चे की लम्बी आयु हेतु व्रत रखकर जमीन पर हवन कुण्ड शिव–पार्वती की पूजा–अर्चना करतें है। साथ ही पसहर चांवल के साथ महुआ, लाई और 6 प्रकार की भाजी का सेवन करते है। माताएँ अपने बच्चे के पीठ पर चूना के घोल से कपड़े के माध्यम से पीठ पर छाप लगाकर उनको आर्शिवाद देतें है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

पोराः– पोला त्यौहार भाद्रपद माह के अमावस्या को मनाया जाता है। यह छत्तीसगढ़ के कृषकों का सबसे प्रिय त्यौहार है। भाद्रपद माह में धान की बुवाई, रोपाई और निदांई पश्चात् कृषक बैल–भैंस के प्रति आभार प्रकट करने के लिए उनकी पूजा करतें हैं। महिलाएँ मिट्टी के पोला का विधि–विधान पूजा–अराधाना करती है और बच्चे पूजा पश्चात् मिट्टी के बैल से खेलतें है। यह त्यौहार कृषक और उसके बैल के प्रेम व दया का प्रतीक है।

तीजाः–तीजा त्यौहार भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष को मनाया जाता है। इस दिन सभी माताएँ, दीदी निर्जला व्रत रखकर अपने–अपने मायके जाकर अपने पति की लम्बी आयु के लिए केला पत्ता का मड़वा तैयार कर भगवान शंकर और पार्वती माता की पूजा करतें है। साथ ही अपने मायका के कृषि फसल, खेत–खलिहान में उत्तरोतर वृद्वि हेतु पूजा अर्चना करते है। इस अवसर पर विशेष छत्तीसगढ़ी व्यंजन ठेठरी, खुरमी बनाया जाता है।

करमा त्यौहारः–करमा त्यौहार उरांव, बैगा, बिंझवार व गोंड़ जनजाति का विशिष्ट त्यौहार है। इसे भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष के एकादशी को मनाया जाता है। इस दिन करमडार गड़िया का नृत्य किया जाता है और मुठिया रोटी बनाया जाता है। यह त्यौहार चावल के पौधा तैयार के पश्चात् व फसल काटने के पहले मनाया जाता है। साथ ही कर्मा देवता से अच्छे फसल हेतु कामना की जाती है।

दसरहाः– दशहरा त्यौहार आश्विन माह कृष्ण पक्ष दशमी के दिन मनाया जाता है। इसे असत्य में सत्य की जीत का त्यौहार भी कहा जाता है। इस दिन सोन पत्ता के वृक्ष को नहीं काटा जाता है। सोन पेड़ के बहुत सारे लाभ है सोन पेड़ जड़ की मिट्टी को सूखने नहीं देती और मिट्टी को उपजाउ बनाती है।

देवारीः– देवारी को हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार माना जाता त्यौहार कार्तिक माह के अमावस्या को मनाई जाती है। कृषक फसल काटने के बाद इस त्यौहार में लक्ष्मी माता की पूजा–अर्चना कर खुशी मनाते है। घर में दीप जलाकर अंधेरे घर को प्रकाशमान बनाया जाता है। यह मान्यता है कि दीप प्रज्वलीत करने से प्रदूषण खत्म होता है।

गोवरधन पूजाः–कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष को प्रथम दिन गोर्वधन पूजा की जाती है। इस दिन गोबर से पहाड़ बनाकर उसे गाय–बैल से पैर से स्पर्श कराकर उनकी पूजा–अराधना की जाती है। यह त्यौहार गाय–बैल के प्रति प्रेम को दर्शाता है। छत्तीसगढ़ शासन ने इसी दिन से गौठान दिवस के त्यौहार मनाने की घोषणा की है।

जैठोनी अकादसीः– जेठौनी अकादसी कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष के एकादशी को मनाया जाता है। इसी दिन कृषक अपने गन्ने फसल की पहली कटाई करतें है। इस दिन गन्ने का मण्डप तैयार करके तुलसी माता और भगवान शालिकराम की विवाह कराया जाता है। इस त्यौहार में मूंगफली, सिंघाड़ा, शकरकंद, अमरूद का प्रसाद अर्पित किये जाते है। जिसके कारण कृषक गन्ने की फसल करने हेतु प्रेरित होते है।

छेरछेराः– छेरछेरा त्यौहार पूस माह के पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसे पूस पूर्णिमा भी कहा जाता है। कृषक अपने धान की मिसाई कर अपने घर के कोठी में रखते है उसके पश्चात् यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन सभी बच्चे गीत–गाते हुए गांव के सभी घरमें छेरछेर मांगते है। इस पर्व को दान–पुण्य का पर्व भी कहा जाता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

छेरछेरा–छेरछेरा–छेरछेरा।
कोठी के धान ल हेरते हेरा।।

माटी त्यौहारः– यह त्यौहार बस्तर जिला के आदिवासी लोग मनाते है। चैत्र माह में मिट्टी की पूजा करके इस त्यौहार को मनाया जाता है। यहॉ के लोगों में यह मान्यता है कि मिट्टी से ही हमें अन्न–चावल, कंद–मूल, सब्जी–भाजी, मिलता है इसलिए धरती को मां का दर्जा देते है। माटी त्यौहार धरती के प्रति आभार प्रकट करने के लिए मनाया जाता है। इस दिन चावल को पलाश पेड़ के पत्ते के दोना में माटी देव के पूजा करते है। और अच्छे फसल की कामना के लिउ धरती माता से आर्शीवाद मांगते है।

भीमा जात्राः– ज्येष्ठ माह में भीमा देव और धरती माता के विवाह कराकर यह त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार अच्छी वर्षा के कामना हेतु मनाया जाता है।

आमाखाईः– यह त्यौहार बस्तर कें आदिवासी आम फलने के बाद बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। सर्वप्रथम आम को अपने कुल देवता को अर्पित करते है। उसके पश्चात् ही आदिवासी आम खाते है। हमारे छत्तीसगढ़ में जो भी प्रकृति की खाने–पीने की चीज होती है सबसे पहले कुल देवता को अर्पित/भेंट करने उनके प्रति आभार प्रकट किया जाता है।

बीज बोहानीः– यह त्यौहार आसाढ़ माह में मनाया जाता है। इसे कोरवा जनजाति ज्यादातर मनाते है कृषि के दिनों में खेत–खलिहान में बीज डालकर इस प्रथम त्यौहार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

छत्तीसगढ़ के कोरा।
भइया धान के कटोरा।।
छत्तीसगढ़ के पावन माटी।
जेमा छटके धान के बाली हे।
उपजाउ हे कन्हार–मटासी।
जेहा चंदन सोनहा लाली हे।।

धान हमारे पुरोधा की पहचान है। इससे खेत खलीहान लहलहाते है। यही हमारे कुल, धर्म देवी अन्नपूर्णा माता है। इसी से हमारा लालन–पालन होता है। यह हमारे जिंदगी का आधार है। इसके बिना संसार में अंधेरा हो जाएगा क्योंकि यही हमारा भोजन है। धान से ही हमारी हरेली, पोरा, छेरछेरा, तीज त्यौहार सभी में इसके बिना सुख–दुख के कार्य संपन्न नहीं होता है।

नवा खानीः– नवा खानी त्यौहार भाद्रपद माह में नया फसल आने के बाद मनाया जाता है। नया अन्न के दूध–चावल और बोबरा बनाकर घर के कुल देवता को भेंट करने के पश्चात् सभी परिवार एक साथ नया खाई खाते है।

हमारे छत्तीसगढ़ के त्यौहार कृषि, फसल, पर्वत–पहाड़, पेड़–पौधे और प्रकृति देवी–देवताओं से जुड़ी हुई है। छत्तिसगढ़िया लोग (जल–जमीन–जंगल) पानी, रुख–राई, और मिट्टी को देवता मानते है। और इन्ही की पूजा–अर्चना और अरजी–बीनती करके अपने फसल, जीवन और पर्यावरण के संरक्षण हेतु त्यौहार के रूप में उसे मानते है। यहॉ की निवासी अपने जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक अनेक प्रकार के महोत्सव/मेला/लोकोत्सव और पर्व में अपने पर्यावरण को सहेजने और उसकी संरक्षा हेतु त्यौहार के

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

रूप में सभी लोग मिलजुल कर मनाते है। जिससे पर्यावरण हरा–भरा और अच्छी हरियाली रहती है। तभी तो कहतें हैः–

हरियर छत्तीसगढ़।
सुग्घर छत्तीसगढ़।।

संदर्भ ग्रंथः–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, भाषा संस्कृति और चिंतन– डा0 सुशील त्रिवेदी एवं बाबूलाल शुक्ल।
2. प्राचीन छत्तीसगढ़– प्यारेलाल गुप्त।
3. छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन–दयाशंकर शुक्ल।
4. जनसंपर्क विभाग छ0ग0 शासन की सूचनात्मक पुस्किाएँ।
5. मासिक पत्रिका जनमन के कुछ अंकों में प्रकाशित।
6. पत्रिका पहट–छत्तीसगढ़ के लोक कला, लोक साहित्य अउ लोक संस्कृति के दरपन।
7. पत्रिका– हमर धरोहर।
8. पत्रिका– परदेशी राम वर्मा के लेख।